

भाग एक : खण्ड बारह

मध्य प्रदेश कांठ विचरान (विनियमन) अधिनियम, 1984

मध्य प्रदेश अधिनियम बर्मांक 13, वर्ष 1984

दिनांक 11 अक्टूबर, 1984 को महामहिम राष्ट्रपति जी की अनुमति प्राप्त तथा मध्य प्रदेश शासन, विविध और विधायी कार्य विभाग की अधिसूचना ब. 8762/इक् कसी/अ. (००१) दि. 11 अक्टूबर, 1984 द्वारा राजपत्र में प्रकाशित (पृष्ठ 1155-1173)

वनो तथा पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से आरामिलों 2(.....) की स्थापना और उनके प्रचालन का तथा कांठ विचरान के व्यापार का लोकिहत में विनियमन करने के लिये उपलब्ध करने हेतु अधिनियम।

भारत गणतन्त्र के पैंतीसवें वर्ष में मध्य प्रदेश विधान मण्डल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियम हो।

धारा 1. संक्षिप्त नाम वि: तार - (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम "मध्य प्रदेश कांठ विचरान (विनियमन) अधिनियम, 1984" है।

(2) इसका वि: तार पूरे मध्य प्रदेश पर है।

धारा 2. परिभाषाएँ - इस अधिनियम में, जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो :

1(क) "विनियमित दिन" से अभिप्रेत है 15 दिवसम्बर, 1983 जिसको कि मध्य प्रदेश कांठ विचरान (विनियमन) अध्यादेश 1983 (11 वर्ष 1983) सम्पूर्ण म. प्र. राज्य में प्रवृत्त हुआ।

(ख) "अनुज्ञिप्त" से अभिप्रेत है, इस अधिनियम के अधीन मन्जूर की गई अनुज्ञिप्त।

(ग) 'अनुज्ञिप्तधारी' से अभिप्रेत है, ऐसा कोई व्यक्ति, जिसे इस अधिनियम के अधीन अनुज्ञिप्त मन्जूर की गई है।

(घ) "अनुज्ञापन अधिकारी", से अभिप्रेत है धारा (3) के अधीन नियुक्ति किया गया अनुज्ञापन अधिकारी।

(ङ) "अधिसूचित आदेश" से अभिप्रेत है राजपत्र में अधिसूचित किया आदेश।

1. कांठ विचरान (विनियमन) संशोधन अध्यादेश (17 वर्ष 1984) की धारा 3 से प्रेरित: थापित। अध्यादेश का स्: थान म. प्र. अधिनियम ब. 13 (वर्ष 1984) ने लिया।

(च) "आरामिल" से अभिप्रेत है ऐसे संयंत्र और मशीनरी जिससे, और ऐसा पिरसर जिसके अन्तर्गत उसकी प्रसीमाएँ भी जाती हैं जिसमें या जिसके किसी भाग में कांठ की विचराई विद्युत या यांत्रिक शक्ति के सहायता से की जाती हैं, किन्तु इसमें वमार् (सिल), टिनरंग मशीन, रून्दा (प्लेनर), छोटा आरामिल मशीन (जिग सा मशीन) तथा बोलिडिंग टूल स सम्मिलित नहीं हैं।

1(छ)(विलोपित)।

(ज) "विचरान" से उसके व्यापारिक रूप भेदों तथा सजातीय पदों सहित, अभिप्रेत है या तो विद्युत या यांत्रिक शक्ति की सहायता से यांत्रिक प्रोबिया द्वारा या ह: तचाहित, आरों से कांठ की विचराई करने, कटाई करने, उसे रूपान्तरित करने, उसे गढ़ने या उसका संशोषण (Seasoning) करने की संविद्या और उसके अन्तर्गत उसका पिररिक्त (Preservation) और उसे साधित

(Treatment) किया जाना आता है।

1(ज-ज) "लकड़ी-टाल" से अभिप्रेत है किसी आरामिल की स्: थापना के लिए राज्य सरकार द्वारा

लकड़ी-टाल के रूप में अधिसूचित किया गया कोई विनिर्दिष्ट स्: थान,"

(झ) "यान" (Vehicle) के अन्तर्गत शक, शैक् टर-शाली, मोटर-यान, नाव तथा छकड़ा (Cart) आते हैं।

(ञ) "कांठ" के अन्तर्गत वृक्ष आते हैं जबकि वे गिर गये हों, गिराये गये हों और किसी भी रूप जाति का सम: त कांठ, चाहे वह किसी भी प्रयोजन के लिये काटा गया, रूपान्तरित किया गया, गढ़ा गया, चीरा गया या खोखला किया गया हो या न किया गया हो।

(ट) उन शब्दों तथा अभिव्यक्तियों के, जो इस अधिनियम में प्रयुक्त हैं, किन्तु परिभाषित नहीं हैं और जो भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16) में परिभाषित हैं, तो वे ही अर्थ होंगे जो उस अधिनियम में उसके लिए दिये गये हैं।

धारा 3. अनुज्ञापन अधिकारी की नियुक्ति - राज्य शासन-

(क) खण्ड वन पदाधिकारी की पद प्रेणी से अनन्त पद प्रेणी के किसी अधिकारी को इस नियम को प्रयोजन के लिए अनुज्ञापन अधिकारी के रूप में नियुक्त कर सकेगी।

(ख) उस स्: थानीय सामाओं को परिनिर्णय कर सकेगी जिनके भीतर कोई अनुज्ञापन अधिकारी उन शक्तियों का प्रयोग तथा उन कर्तव्यों का पालन करेगा जो इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन अनुज्ञापन अधिकारी को प्रदत्त की गई है तथा उस पर अधिरोपित किये गये हैं।

धारा 4. अनुज्ञिप्त के लिये आवेदन - विनियमित दिन से-

(क) कोई भी व्यक्ति किसी आरामिल 1(.....) की ओर थापना इस अधिनियम के अधीन उस निमित्त तमन् जूर की गई अनुज्ञिप्त के ूाधिकार के अधीन तथा उसकी शतोर के अधीन रहते हुए ही करेगा अन् यथा नहीं।

"परन्तु राज् य सरकार ऐसी कालाविध अधिसूचित कर कसेगी जिसके दौरान किसी नई आरामिल की ओर थापा के लिए कोई अनुज्ञिप्त मंजूर नहीं की जाएगी।"

(ख) कोई भी व्यक्ति किसी ऐसे आरामिल 1(.....), जो उक्त तारीख के अतःत्व में हो तब तक नहीं चलायेगा, जब तक कि ऐसे व्यक्ति को, उसके द्वारा ऐसी तारीख से तीस दिन के भीतर, किये गये आवेदन पर, इस अधिनियम के अधीन उस निमित्त त अनुमित मंजूर न कर दी गई हो :

1. म.ू. कां ठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2003 (ब. 13 वर्ष 2003) द्वारा विलोपित। एवं 5/2011 दि. 11.1.2011

परन्तु तीस दिन की कालाविध तक, तथा उसके पँचात् उतनी काला विध के दौरान, जिसमें आवेदन विचाराथर लिम्बत रहता है, यह समझा जायेगा मानो कि ऐसे व्यक्ति को इस अधिनियम के अधीन अनुज्ञिप्त मंजूर कर दी गई थी और वह तदनुसार आरामिल 1(.....) को चला रहा था।

धारा 5. ूतिषद्ध क्षेत्र की घोषणा - (1) राज् य सरकार अधिसूना द्वारा, उन कारणों से, जो उस अधिसूचना में विनिर्दर ट किये जावेंगे, किसी क्षेत्र को, एक बार में तीन वर्ष से अधिक ऐसी कालाविध के लिए जो उसमें विनिर्दर ट की जावे, ूतिषद्ध क्षेत्र (Prohibited Area) घोषित कर सकेगी।

(2) उन कालाविध के दौरान, जिसके लिए किसी क्षेत्र को उपधारा (1) के अधीन ूतिषद्ध क्षेत्र घोषित किया गया है निम्निलिखत परिणाम होंगे, अर्थात् -

(क) उस क्षेत्र में कोई आरामिल 1(.....) ओर थापित करने के लिये अनुज्ञिप्त मंजूर नहीं की जावेगी।

(ख) उस कालाविध के दौरान कोई अनुज्ञिप्त नवीनीकृत (Renewed) नहीं की जावेगी।

(ग) उस क्षेत्र में ित आरामिल 1(.....), चलना बन्द हो जायेगी और वह चिरान की संबियाएँ (Sawing Operations) बन्द रखेगा;

किन्तु अनुज्ञापन अधिकारी, आरामिल या आरा गड्डे में जमा कां ठ की चिराई की जाने की अनुज्ञा ऐसी शतोर एवं निबन्धों के अधीन, दे सकेगा, जिन्हें अधरोपित करना वह ठीक समझे।

(घ) बन्द रहने के कारण हुई नुकसानी के मद्दे कोइर दावा न तो महण किया जायेगा न ही कोई नुकसानी संदेय होगी।

"5-क. लकड़ी-टाल की घोषणा -

(1) राज् य सरकार, अधिसूचना द्वारा, ऐसी तारीख से तथा उन कारणों से, उस अधिसूचना में विनिर्दर ट किए जाएं, किसी क्षेत्र को लकड़ी-टाल के रूप में घोषित कर सकेगी।

(2) उपधारा (1) के अधीन लकड़ी-टाल की घोषणा की तारीख से किसी नई आरामिल के लिए ऐसी दूरी के भीतर जैसी कि विहित की जाए कोई भी अनुज्ञिप्त तब तक मंजूर नहीं की जाएगी जब तक कि लकड़ी-टाल के भीतर आरामिल का ओर थापित किया जाना ूः तावित नहीं हो जाता है।

(3) उपधारा (1) के अधीन लकड़ी-टाल की घोषणा की तारीख के पूर्व मंजूर की गई अनुज्ञिप्त उपधारा (2) के अधीन विहित की गई दूरी के भीतर तब ही नवीकृत की जाएगी यदि अनुज्ञिप्तधारी नवीकरण की तारीख से दो वर्ष की कालाविध के भीतर आरामिल को लकड़ी-टाल में ले जाने का वचन देता है"

धारा 6. अनुज्ञिप्त की मन् जूरी, उसका नवीनीकरण, ूतिसंहरण या निनलम् बन -

(1) धारा 4 के अधीन अनुज्ञिप्त के लिए आवेदन ऐसे ूारूप में होगा और उसके साथ ऐसी आवेदन फीस तथा अनुज्ञिप्त की शतोर के सम्यक् अनुपालन के लिए ऐसा ूतिभूत निनक्षेप ूः तुत करेगा जैस विहित किया जाये।

1. म.ू. कां ठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2003 (ब. 13 वर्ष 2003) द्वारा संशोधित/विलोपित। (2) उपधारा (1) के अधीन आवेदन ूाप त होने पर अनुज्ञापन अधिकारी, ऐसी जाँच करने के पँचात् जैसी वह ठीक समझे-

(एक) अनुज्ञिप्त मंजूर कर सकेगा।

(दो) लिखित आदेश द्वारा, उन कारणों से, जो उस आदेश में संक्षिप्त त में किथत किये जावेंगे,

अनुज्ञिप्त मंजूर करने से इंकार करेगा;

परन्तु अनुज्ञिप्त मंजूर करने से इंकार करने वाला कोई आदेश तब तक पारित नहीं किया जायेगा जब तक कि आवेदक को सुनवाई का अवसर न दे दिया गया हो।

(3) उपधारा (2) के अधीन मंजूर की गई अनुज्ञिप्त, इस अधिनियम के उपबन्धों तथा ऐसी शतोर के, जो विहित की जावें, अध् यधीन होगी।

(4) इस धारा के उपबन्ध, अनुज्ञिप्त के नवीनीकरण को, उसी ूकार लागू होंगे जिस ूकार अनुज्ञिप्त

के मंजूर किये जाने या अनुज्ञिप्त मंजूर करने से इन् कार करने के लिए लागू होते हैं।

(5) यदि अनुज्ञापन अधिकारी का, या तो उसे इस निमित्त किये गये निर्देश पर से या अन्यथा या समाधान हो जाता है कि-

अधिसूचना - अधि. ब. एफ 30.4.2002-दस-3 दिनांक 22.7.2009

म.पू. शासन का ठीकरान (विनियमन) अधिनियम 1984 (ब. 13 वर्ष 1984) की धारा 5 की उपधारा (1) के द्वारा दत्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुए, तथा इस विभाग की अधिसूचना ब. एफ 30.4.2002-दस-3 दिनांक 8 अग: त, 2006 को जो म.पू. राज्य पऽ में दिनांक 18.8.2006 को प्रकाशित हुई के तारतम्य में राज्य सरकार, एतद् द्वारा, लोकिहत तथा वन पर्यावरण को संरक्षित करने तथा उनकी सुरक्षा करने की दृष्टि से नगरपालिका निगम, नगर पंचायत तथा विशेष क्षेत्र विकास प्राधिकरण क्षेत्र को छोड़कर आरक्षित या संरक्षित वन की सीमाओं के बाहर 20 किलोमीटर के भीतर के क्षेत्रों को 8 अग: त, 2009 से 3 वर्ष की कालाविध के लिए, उक्त अधिनियम के प्रयोजन के लिए प्रतिषेध क्षेत्र घोषित करता है।

परन्तु माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा गिठत अधिकार द्वारा मुक्त किये क्षेत्र - (1) बालाघाट जिले के किरनापुर, हिररी, लांजी, खेरलांजी दल्हापुर, लालबारा, मानपुर, अमला झिरी तथा को सभी और ऐसे सम: त क्षेत्र जिन्हें केन्द्रीय साधिकार समित ने मुक्त किया है या ऐसी आरा मशीनें जिन्हें केन्द्रीय साधिकार समित ने उनके निरन्तर प्रचालन के लिए अनुज्ञात किया है, उक्त त घोषणा किये गये प्रतिषेध क्षेत्र से मुक्त रहेंगे। अधि.ब. म.पू. राजपऽ भाग 1 दिनांक 31.7.09 पृष्ठ 1893 पर प्रकाशित।

(क) अनुज्ञिप्त आरा मिल 1(.....) पर अपने नियन्त्रण से सम्पूर्ण: या भागत: अलग हो गया है, या यह कि उसने ऐसी आरा मिल 1(.....) को चलाया या उस पर वांछित रखना अन्यथा बन्द कर दिया है, या

(ख) अनुज्ञिप्तदारी ने, युक्तियुक्त हेतु बिना, अनुज्ञिप्त की शर्तों में से किसी शर्त का या अनुज्ञापन अधिकारी द्वारा विविधपूर्वक दिये गये किसी निर्देश का अनुपालन नहीं किया है, या इस अधिनियम के, या उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों में से किसी उपबन्ध का उल्लंघन किया है, या

1. म.पू. कां ठीकरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा विनिलोपित।

(ग) अनुज्ञिप्तधारी के आरा मिल 1(.....) के पिरसर में ऐसा कां ठ रखा है जिसके सम्बन्ध में वह समाधानरूप से लेखा-जोखा नहीं दे सकता है और पिरणाम: वरूप जो धारा 9 के अधीन अधिहत किये जाने के दायित्व वाधिन है, तो किसी ऐसी अन्य शांति के लिए जिसके लिए अनुज्ञिप्तधारी इस अधिनियम के अधीन उत्तदायी हो सकता है प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, अनुज्ञापन अधिकारी हेतुक दशार्न का अवसर अनुज्ञिप्तधारी को देने के पचात् अनुज्ञिप्त प्रतिसंहत (Revoke) या निलम्बत (Suspend) कर सकेगा, और वह धनराशि, यदि कोई हो,

जो उन शर्तों के निजनेके अधीन अनुज्ञिप्त मंजूर की गई है, सम्पूर्ण पालन के लिए प्रतिभूत के रूप में जमा की गई है, उसको अथवा उसके किसी भाग को समपहत (Forfeit) कर सकेगा।

(6) उपधारा (5) के अधीन जारी किये गये प्रत्येक आदेश की एक प्रति अनुज्ञिप्तधारी को दी जायेगी।

धारा 7. प्रवेश, निरीक्षण, तलाशी, अभिमहण आदि की शक्ति - (1) किसी आरा मिल 1(.....) की स्थिति का अभिन्न चयन (Ascertaining) करने या उसके संचालन की परीक्षा कार्य करने के प्रयोजन से, या इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों का अनुपालन सुनिश्चित करने की दृष्टि से, अनुज्ञापन अधिकारी या कोई ऐसा अन्य व्यक्ति, जो अनुज्ञापन अधिकारी द्वारा इस निमित्त प्राधिकृत किया गया हो-

(क) किसी आरा मिल 1(.....) में प्रवेश कर सकेगा और उसका निरीक्षण कर सकेगा।

(ख) किन्हीं द: तावेजों, बिहयों, रिज: टरों, या अभिलेखों को, जो किसी आरा मिल 1(.....) पर नियन्त्रण रखने वाले, किसी व्यक्ति के अथवा, उसके सम्बन्ध में नियोजित किसी के कब्जे या अधिकार में है, परीक्षा कर सकेगा और इस प्रयोजन के लिए उन्हें पेश किये जाने का आदेश दे सकेगा।

(ग) किसी व्यक्ति की तलाशी ले सकेगा, या इस अधिनियम के तथा उसके बनाये गये नियमों के उपबन्धों के उल्लंघन में उपयोग में लाये गये या उपयोग में लाये जाने के आशियत, किसी पिरसर, यान, मशीन, औजारों और उप: करों की तलाशी ले सकेगा और उस प्रयोजन के लिये किसी यान या व्यक्ति को रोक सकेगा।

(घ) ऐसे कां ठ, संयंत्रों और मशीनरी, औजार, यान और किसी अन्य व: तु को, जिसके कि बारे में उसे सन्देह है कि वह इस अधिनियम के या, उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों का उल्लंघन किये जाने में पहले से ही अन्तर्ग: त है, या उपयोग में लाई जाने वाली है, अभिमहण (Seize) कर सकेगा।

(2) दण्ड प्रविषया संहिता, 1973 (1974 का 2) की धारा 100 के उपबन्ध, जे तलाशी और अभिमहण से सम्बन्धित हैं, जहाँ तक हो सके, इस धारा के अधीन की तलाशियों और अभिमहणों को लागू होंगे।

धारा 8. विवरणियों का प्र: तुत किया जाना - प्रत्येक अनुज्ञिप्तधारी, यथास्थित आरा मिल 2(.....) के कामकाज के सम्बन्ध में ऐसी विवरणियाँ, ऐसे प्रारूप में, और ऐसे अधिकारी को, तथा ऐसी तारीखों पर प्र: तुत करेगा, जैसे विहित किया जावे।

1. म.०. कां ठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा विलोपित।
2. म.०. कां ठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 1984 द्वारा लुप्त तथा धारा 9

धारा 9. आरामिल तथा 1(.....) में के कां ठ के टाक के लेखाओं का रखा जाना - (1) ऐसा कां ठ का चाहे वह चिरा हुआ हो, जो आरामिल 1(.....) में या चिरान ०: थल पर पाया जावे या चिरान के योजन के लिए या इसी अन्य योजन के लिए किसी व्यक्ति द्वारा किसी भी समय या किसी कालाविध के दौरान किसी भी रीति में या किन्हीं भी साधनों द्वारा वहाँ लाया जाये, लेखाजोखा समुचित रूप से रखा जावेगा तथा ऐसे सुसंगत साधन यदः तावेज, रसीदें, आदेश तथा मण-पड जो यह दिशत करने के लिए आवँयक हों कि वह कां ठ वैध रूप से अभूत किया गया है, रखे जावेंगे और निरीक्षण के समय उपलब्ध कराये जावेंगे। कां ठ के ऐसे टाक के बारे में जिसका समाधान रूप में लेखा जोखा नहीं रखा गया है, यह उपधारणा की जावेगी कि वह विध-विरुद्ध (Un-lawfully) अभूत किया गया है और कां ठ का वह टाक अधिकृत किये जाने के दायित्व वाधन होगा।

धारा 10. बिना अनुमित (Unlicensed) आरामिल में विद्युत संयोजना आदि का रूतिषेध-(1) नियम दिन से ही और विद्युत से सम्बन्धित तत् समय पूर्व त किसी अधिनियम में अनुतिवर्त किसी बात के होते हुए भी, किसी आरामिल के योजन के लिए कोई विद्युत ऊजार् तब तक उपयोग नहीं की जावेगी और कोई विद्युत संयोजन (Electric Connection) तब तक नहीं लगाया जावेगा या उस योजन के लिए तब तक चालू नहीं रखा जावेगा, जब तक कि ऐसी आरामिल इस अधिनियम के उपबन्धों के अनुसार सम्यक् रूप से अनुज्ञप्त तन हो या अनुज्ञप्त तन समझी जाती हो और ऐसे विद्युत संयोजन को तब तक चालू रखा जावेगा जब तक कि ऐसी आरामिल, इस अधिनियम के अधीन मंजूर की गई या मंजूर की गई समझी गई, विधिमान्य अनुज्ञप्त के अधीन चालू रहती है।

(2) राज्य सरकार इस धारा के योजन को कार्यान्वित करने के लिए नियम बना सकेगी।

नोट - उपरोक्त धारा 9 एवं 10 के अनुतर्गत लेखा रखा जाना वैध है। मि.पि. ब. 2992/1984 निणर्ण दि. 8-9-87 जबलपुर उच्च न्यायालय।

धारा 11. अपील - (1) अनुज्ञप्त मंजूर करने या अनुज्ञप्त नवीनीकृत करने से अनुज्ञापन अधिकारी द्वारा इन कार किये जाने से या किसी अनुज्ञप्त के निलम्बन या रूतिसंहरण से व्यक्ति ऐसे इंकार या निलंबन या रूतिसंहरण के आदेश की, उस पर तामिल की जाने से तीस दिन के भीतर, विहित रूाधिकारी को अपील कर सकेगा जो अपीलाधीर को और अनुज्ञापन अधिकारी को सुने जाने का अवसर देने के पँचात् अपील का विनिर्णय करेगा तथा वह आदेश अनुज्ञापन अधिकारी के लिए आबद्ध कर होगा।

(2) अनुज्ञापन अधिकारी का आदेश, जब तक कि विहित रूाधिकारी सशतर् या बिना शतर् या अन्यथा निदर्शन दें, उपधारा (1) के अधीन की अपील का निपटारा होने तक पूर्व त बना रहेगा।

धारा 12. कां ठ, संयंठो, मशीनरी आदि के विध विरुद्ध टाक का अधहरण - (1) धारा (4) खण्ड (ख) में उपबिन्धत से सिवाय-

(क) जहाँ कोई आरामिल 2(.....) किसी ऐसे क्षेत्र में जिसे धारा 5 की उपधारा (1) के अधीन रू

तिसद्ध क्षेत्र (Prohibited Area) घोषित किया है, ०: थापित किया जाता है या चलाया जाता है, या

(ख) जहाँ कोई आरामिल या 2(.....) धारा 6 की उपधारा बमशः 2 तथा 4 के अधीन अनुज्ञप्त के बिना

या अनुज्ञप्त के नवीनीकरण के बिना ०: थापित किया जाता है या चलाया जाता है।

1. म.०. कां ठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 1984 द्वारा लुप्त तथा धारा 9

2. म.०. कां ठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा विलुप्त।

(ग) जहाँ कोई आरामिल 1(.....) धारा 6 की उपधारा (5) के अधीन अनुज्ञप्त के निलम्बित या रू

तिसंहत कर लिये जाने के पँचात् चलाया जाता है; या

(घ) जहाँ कोई आरामिल 1(.....) धारा 10 की उपधारा (1) का उल्लंघन करते विद्युत ऊजार् या विद्युत

सं: थापन की सहायता से चलाया जाता है; या

(ङ) जहाँ किसी आरामिल 1(.....) में ऐसा कां ठ भण्डारित किया जाता है जिसका लेखा-जोखा नहीं रखा गया है।

2 जहाँ अनुज्ञापन अधिकारी विध विरुद्धतया (Unlawfully) भण्डारित कां ठ के टाक को यथांथित उन सम: त संयंठो, मशीनरी, उपकरणों और उप: करों को, की या उनके किसी भाग को अधिहृत (Confiscation) किये जाने का आदेश दे सकेगा।

(2) उपधारा (1) के अधीन किसी सम्पत्ति को अधिहृत करने वाला कोई आदेश तब तक नहीं किया जावेगा जब तक कि उस व्यक्ति को, इसकी सम्पत्ति अभिमिहृत (Seize) की गई है, और उस दशा में जबकि ऐसी सम्पत्ति का ०: वामी ज्ञात हो, ऐसे व्यक्ति को-

(क) वे आधार जिन पर ऐसी सम्पत्ति को अधिहृत किया जाना ०: तावित है, सूचित करते हुए लिखित सूचना नहीं दे दी जाती।

(ख) अधिहरण के आधारों के विरुद्ध लिखित अभिवावेदन उतने युक्तियुक्त समय के भीतर जितना सूचना में विनिर्दिष्ट किया जाए करने का अवसर नहीं दे दिया जाता और

(ग) इस मामले में सुनने की युक्तियुक्त अवसर नहीं दे दिया जाता।

(3) वन संरक्षक की ओणी से अनिवार्य पद ओणी का कोई वन अधिकारी जिसे राज्य सरकार ने अधिसूचना द्वारा इस निमित्त सशक्त किया हो। अनुज्ञापन अधिकारी द्वारा उपधारा (1) के अधीन किये गये अधिहरण के आदेश की तारीख से तीस दिन के भीतर या तो वृंरणा से या आवेदन किया जाने पर उस आदेश से सम्बन्धित अभिलेख मंगा सकेगा और उसकी परीक्षा कर सकेगा और ऐसी जाँच करवा सकेगा तथा ऐसे आदेश पारित कर सकेगा जैसा कि वह ठीक समझे, परन्तु किसी व्यक्ति पर अतिकूल प्रभाव डालने वाला कोई आदेश उसे सुने जाने का अवसर दिये बिना पारित नहीं किया जायेगा।

(4) उपधारा (3) के अधीन पारित किसी आदेश से व्यक्ति, ऐसा आदेश उसे संसूचित किया जाने की तारीख से तीस दिन के भीतर, जिला न्यायालय को अपील कर सकेगा जो उस क्षेत्र पर अधिकारिता रखता है, जिसमें वह सम्पत्ति अभिगृहीत की गई और वह जिला न्यायालय पक्षकों को सुने जाने का अवसर देने के पक्ष चाहे ऐसा आदेश पारित करेगा, जैसा वह ठीक समझे और जिला न्यायालय द्वारा इस प्रकार पारित किया गया आदेश अन्तिम होगा। जहाँ उपधारा (1) या उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन पारित किसी सम्पत्ति का अधिहृत किये जाने का कोई आदेश ऐसी सम्पूर्ण सम्पत्ति या उसके भाग के सम्बन्ध में अन्तिम हो गया हो, वहाँ यथास्थित ऐसी सम्पत्ति या उसका ऐसा भाग सभी विवल्गमों (Encumbrances) से मुक्त रूप में, राज्य सरकार में निहित हो जायेगा।

(5) उपधारा (1) या उपधारा (3) या उपधारा (4) के अधीन अधिहरण के आदेश के सम्बन्ध में यह नहीं समझा जायेगा कि वह किसी ऐसी अन्य शांति का अधिरोपित किया जाना विजर्त करता है जिसके लिये वह व्यक्ति, जिससे वह सम्पत्ति अभिगृहीत की गई है, इस अधिनियम के अधीन दायी है।

1. म.रू. कांठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2003 द्वारा विलुप्त।

2. म.रू. कांठ चिरान (विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2005 (ब. 9 वर्ष 2005) द्वारा संशोधित (म.रू. राजप. वि. 27.4.05 पृ. 372 पर प्रकाशित)

नोट - अधिसूचना ब. 18-3-85-दस 3 (अध. तीन) के द्वारा धारा 12 की उपधारा (3) के अन्तर्गत वन संरक्षक, जो क्षेत्रीय वन वृत्त के प्रभार में हो, इस उपधारा के अधीन शक्ति का प्रयोग करने को सशक्त करती है।

धारा 13. शांति - (1) यदि कोई व्यक्ति इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाये गये नियमों एवं उपबन्धों में से किसी उपबन्ध का उल्लंघन करेगा या करने का प्रयत्न करेगा या उसके उल्लंघन का दुंरणा करेगा, तो वह कारावास से जिसकी अवधि एक वर्ष तक की हो सकेगी या जुर्माने से जो बीस हजार रुपये तक का हो सकेगा या दोनों से, और चालू रहने वाले उल्लंघन की दशा में अतिरिक्त जुर्माने से जो ऐसे प्रत्येक दिन के लिए जिसके दौरान ऐसा उल्लंघन, ऐसे प्रथम उल्लंघन के लिए दोषिसिद्ध के पक्ष चालू रहता है, चार सौ रु. तक का हो सकेगा, दण्डनीय होगा: परन्तु -

(एक) जहाँ ऐसा उल्लंघन, प्रयत्न या दुंरणा धारा (4) से सम्बन्धित है या

(दो) जब उस उल्लंघन में अन्तर्गत विधि विरुद्ध (Unlawful) कांठ का परिमाण, पाँच घन मीटर से अधिक है, वहाँ द्वितीय या पक्ष वतीर् अपराध के लिये, दोनों में से प्रत्येक दशा में न्यूनतम कारावास तीन मास का तथा दोनों में से प्रत्येक दशा में न्यूनतम जुर्माना छः हजार रुपये होगा।

(2) यदि कोई व्यक्ति -

(एक) जब उसे इस अधिनियम द्वारा या इस अधिनियम के अधीन के किसी आदेश द्वारा कोई कथन करने या ऐसी जानकारी देने के लिये अपेक्षित किया गया हो, ऐसा कथन करेगा या ऐसी जानकारी देगा जो किसी तात्त्विक (Material) विनिर्दिष्ट के सम्बन्ध में मिथ्या है और जिसके बारे में वह यह जानता है कि उसके पास विवेक वास करने का कारण है कि वह मिथ्या है अथवा जिसके बारे में उसे यह विवेक वास नहीं है कि वह सत्य है; या

(दो) किसी बही, लेखा, अभिलेख, घोषणा, विवरणी या अन्य दस्तावेज में, जिसे रखने या देने के लिये वह इस अधिनियम के अधीन अपेक्षित है, यथापूर्वोक्त कोई कथन करेगा, वह कारावास से जिसकी अवधि छह मास तक की हो सकेगी या जुर्माने से जो छः हजार रुपये तक का हो सकेगा या दोनों से दण्डनीय होगा।

धारा 14. कम्पिनियों द्वारा अपराध - (1) जहाँ इस अधिनियम के अधीन कोई अपराध, किसी कम्पनी द्वारा किया गया है, वहाँ प्रत्येक ऐसा व्यक्ति जो उस अपराध के किये जाने के समय उस कम्पनी के कारबार के संचालन के लिये, उस कम्पनी का भारसाधक और उस कम्पनी के प्रति उत्तरदायी था और साथ ही वह कम्पनी भी ऐसे अपराध के दोषी समझे जावेंगे और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही किये जाने और दिण्डित किये जाने के भागी होंगे।

परन्तु इस अपराध में अन्तर्गत कोई भी बात ऐसे किसी व्यक्ति को इस अधिनियम में उपबिन्धित किसी दण्ड का भागी नहीं बनाएगी, यदि वह साबित कर देता है कि अपराध उसकी जानकारी के बिना किया गया था या यह कि उसने ऐसे अपराध के किये जाने का निवारण करने के लिये सम्पत्त परता बरती थी :

(2) उपधारा (1) में अन्तिवर्तित किसी बात के होतु हुए भी जहाँ इस अधिनियम के अधीन कोई अपराध किसी कम्पनी द्वारा किया गया है और यह साबित हो जाता है कि वह अपराध कम्पनी के किसी निदेशक, बन्धक, सिचव या अन्य अधिकारी की सम्पत्ति या मौनानुकूलता से किया गया है या उस अपराध का किया जाना उसकी किसी उपेक्षा के कारण हुआ माना जा सकता है, वहाँ ऐसा निदेशक, बन्धक, सिचव या अन्य अधिकारी भी उस अपराध का दोषी माना जायेगा और तदनुसार अपने विरुद्ध कार्यवाही की जाने और दिण्डित किये जाने का भागी होगा।

ः पंटीकरण - इस धारा के लिये-

(क) 'कम्पनी' से कोई नियमित निकाय अभिहित है और उसके अन्तर्गत कोई फर्म या व्यक्ति की अन्य संस्था आती है।

(ख) फर्म के सम्बन्ध में निदेशक से फर्म का भागीदार अभिहित है।

धारा 15. सबूत का भार (Burden of proof) - (1) जहाँ कोई कांठ, चाहे वह चिरा हुआ हो या बिना चिरा हो, ऐसी आरामिल [***] से बरामद होता है, जिसके लिये इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों के अधीन कोई विधिमान्य अनुज्ञित मौजूद नहीं है, वहाँ जब तक कि तत्काल साबित नहीं कर दिया जाता है जिसके कि साबित करने की भार अभियुक्त पर होगा, तब तक यह उपधारणा की जायेगी कि वह आरामिल या आरागङ्गा चालू था।

(2) जहाँ इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाये गये नियमों के विरुद्ध किसी अपराध के लिये, किसी अभियोजन में यह सिद्ध होता है कि विधि विरुद्ध घोषित किया गया कोई कांठ किसी व्यक्ति का आरामिल के पिरसर में या किसी ऐसे ःथल पर जहाँ चिराई की जा रही थी, अभिमहीत किया गया था, वहाँ जब तक कि तत्काल साबित नहीं कर दिया जाता है, जिसके कि साबित करने का भार अभियुक्त पर होगा, यह उपधारणा की जायेगी कि ऐसे व्यक्ति ने इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों का उल्लंघन किया है।

धारा 16. अपराध का संज्ञान - कोई भी न्यायालय, इस अधिनियम के अधीन दण्डनीय किसी अपराध का संज्ञान, ऐसा अपराध गिठत करने वाले तत्त्व के बारे में अनुज्ञापन अधिकारी (Licensing Officer) द्वारा या किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा, जिसे राज्य सरकार ने या अनुज्ञापन अधिकारी ने इस निमित्त तसम्यक् रूप से ाधिकृत किया हो, की गई लिखत रिपोर्ट पर ही करेगा अन्यथा नहीं।

नोट- राज्य सरकार ने अधिनियम ब. 18-3-85-x-III (नोट 4) दि. 4-10-85 से धारा 16 के अन्तर्गत कार्यवाही करने हेतु समः त उपवन मण्डलाधिकारियों तथा सहायक वन संरक्षकों को अपनी-अपनी अधिकांशता के भीतर उक्त धारा के लिये अधिकृत किया है।

धारा 17. न्यायालय की अधिकांशता - ःथम वगर्न्यायिक मिजःशेट के न्यायालय के अवर कोई न्यायालय, इस अधिनियम के अधीन दण्डनीय किसी अपराध का विचारण नहीं करेगा।

धारा 18. अपराध का ढूशमन (Composition of offences) (1) राज्य सरकार द्वारा इस निमित्त तसशक् त किया गया वन अधिकारी-

(क) किसी ऐसे व्यक्ति से, जिसकी अनुज्ञित धारा (6) की उपधारा 5 के अधीन ढू	ितसंहत
(Revoke) कर लिये जाने या निलम्बित कर लिये जाने के दायित्व धीन है या जिसके सम्बन्ध में	
युक्तियुक्त रूप से यह सन् देह है कि उसने धारा 8 के अधीन विवरणी ढूः तुत न करने का	धारा 9 के
अधीन कंठ का लेखा-जोखा न रखने, या विधि-विरुद्धतया (Un-lawfully)	अभूत
किये गये कांठ की, जिसका परिमाण (Volume) आधे घन मीटर से कम हो, चिराई	करने का
अपराध ढूथम बार किया है, दस हजार रुपये से अनाधिक धनराशि, यथा ःथित	ऐसे
तिसंहरण या निलम्बन के बदले या ऐसे अपराध के शमन के रूप में तिमिहत कर	सकेगा और
शांःत के रूप में दस हजार रुपये से अनधिक राशि अधरोपित कर सकेगा और	विधि-
विरुद्ध अभूत त किये गये कांठ को, जिसका अभिमहण किया गया था, अधिहत किये	जाने का
आदेश करेगा।	

1. म. ढू. राजपः दि. 26.4.2003 द्वारा विलोपित।

(ख) किसी ऐसे मामले में, जिसमें कोई सम्पत्ति इस अधिनियम के अधीन किये जाने के	दायित्व
धीन अभिमहीत (Seize) कर ली गई है समुचित ाधिकारी द्वारा इस अधिनियम के	अधीन
अधिरण (Confiscation) का आदेश पारित किये जाने के पूर्व, उस सम्पत्ति को, वन	अधिकारी
द्वारा ढूक् किलत उसके मूल्य का संदाय कर दिया जाने पर निमुक्त कर सकेगा।	

(2) वन अधिकारी को यथा-ःथित ऐसी धनराशि का या ऐसे मूल्य का या दोनों का संदाय कर दिया जो पर, अभियुक्त व्यक्ति को, यदि वह अभिरक्षा (Custody) में है तो उसे छोड़ दिया जायेगा (Discharged), अभिमिहत सम्पत्ति निमुक्त कर दी जावेगी, और ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध या ऐसी सम्पत्ति के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की जायेगी।

नोट - मध्य प्रदेश शासन ने अधिसूचना ब. 18-3-85-दस-3- (अधि. पाँच) दि. 4 अक्टूबर 1985 के द्वारा इस अधिनियम की धारा 18 की उपधारा (1) के अन्तर्गत दत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए वन मण्डलाधिकारी, जो क्षेत्रीय वन मण्डल के भार में हो, उक्त धारा के योजन के लिये संसक्त किया है। (देखें राजपस (असाधारण) दि. 7-10-85 पृष्ठ 2001)

धारा 19. अनुज्ञापन अधिकारी आदि लोक सेवक होंगे - अनुज्ञापन अधिकारी और दत्त एक ऐसे व्यक्ति को जिसे इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन, उस पर रोपित किन्हीं कर्तव्यों का निर्वहन करने के लिये सम्यक् रूप से ऋणिकृत किया जाता है, भारतीय दण्ड संहिता 1860 (1860 का 45) की धारा 21 के अर्थ के अन्तर्गत लोक सेवक समझा जायेगा।

धारा 20. सद्भावपूर्वक की गई कार्यावाही का संरक्षण - इस अधिनियम या उसके अधीन बनाये गये किन्हीं नियमों या आदेशों के अनुसरण में, सद्भावपूर्वक की गई या की जाने के लिये आशियत किसी भी बात के लिये कोई बाध, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यावाहियाँ, राज्य सरकार या किसी अधिकारी या किसी व्यक्ति या ऋणिकारी के विरुद्ध नहीं होंगी।

धारा 21. पुरः कार - न्यायालय या यथास्थित अनुज्ञापन अधिकारी ऐसे व्यक्तियों को, जिसकी या जिनकी जानकारी के परिणामः वरूप इस, अधिनियम के, या उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों में से किसी उपबन्ध के उल्लंघन का निर्वर्तन रूप से पता लगा हो, उतनी रकम का, जो जुमाने, की रकम के और/या सम्पत्ति और/या अधिभूत सम्पत्ति के मूल्य के एक-चौथाई के अधिक नहीं होगी, पुरः कार दिये जाने की अनुज्ञा या आदेश दे सकेगा।

धारा 22. नियम बनाने की शक्ति - (1) राज्य सरकार इस अधिनियम के योजनों को कार्यान्वित करने के लिये नियम, अधिसूचना द्वारा और पूर्ण ऋकाशन की शर्त के अधीन रहते हुए बना सकेगी।

(2) विशिष्ट तथा और पूर्णगामी शक्ति की व्यापकता पर दूतितकूल ऋभाव डाले बिना, ऐसे नियमों में निम्नलिखित समः त विषयों या उसमें से किसी विषय के लिये उपबन्ध हो सकेंगे अर्थात् -

(क) धारा (6) की उपधारा (1) के अधीन ऋारूप जिसमें आवेदन किया जायेगा और वह फीस तथा दूतितभूत निक्षेप जो ऐसे आवेदन के साथ होगा।

(ख) धारा (6) की उपधारा (3) के अधीन वे शर्तें जिनके अन्तर्गत अनुज्ञिप्त मन्जूर की जायेगी। (ग) धारा (6) की उपधारा (4) के अधीन वह कालाविध जिसके लिये, वह फीस, जिसका संदाय किया जाने पर, और शर्तें जिनके अधीन अनुज्ञिप्त नवीकृत की जा सकेगी।

(घ) धारा (8) के अधीन के ऋारूप जिसमें, तथा वे तारीखें जिन पर विवरणियाँ दूतुत की जायेंगी और वह अधिकारी जिसका विवरणी दी जावेगी।

(ङ) धारा (10) की उपधारा (2) के अधीन विद्युत संयोजन आदि लगाये जाने के लिये।

(च) धारा (11) के अधीन वह ऋणिकारी जिसको अपील की जायेगी।

(छ) कोई अन्य विषय जो विहित किया जाना अपेक्षित हो या जो विहित किया जाये।

(3) इस अधिनियम के अधीन बनाये गये समः त नियम विधानसभा के पटल पर रखे जावेंगे। धारा 23. अन्य अधिनियमों तथा विधियों का आरामिल 1(.....) को लागू न होना - किसी अन्य अधिनियम या विधि, नियम या आदेश में अन्तिवर्त कोई भी बात या राज्य के किन्हीं क्षेत्रों में विधि का बल रखने वाली कोई भी बात आरामिल 1(.....) को तथा चिरान को उन विषयों का बाबत लागू नहीं होगी जिसके लिये इस अधिनियम में उपबन्ध अन्तिवर्त है।

धारा 24. व्वावृति (Saving) इस अधिनियम के या उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्ध - (क) बड़ईगरी की उन सामान्य ऋबियाओं को जिसमें आरामिल 1(.....) का कार्यर्न ही है, को लागू नहीं होंगे।

(ख) राज्य शासन के ः वामित्व की आरामिल।

धारा 25. किठनाई दूर करने की शक्ति - यदि इस अधिनियम के उपबन्धों को ऋभावशील करने में कोई किठनाई उद्भूत होती है, तो राज्य सरकार, ऐसी उपबन्धों से असंगत न होने वाली, कोई भी बात कर सकेगी, जो उस किठनाई को दूर करने के योजन के लिये उसे आवँयक या समीचीन ऋतीत होती है। परन्तु ऐसा कोई आदेश, इस अधिनियम के ऋारम्भ की तारीख से दो वर्ष की कालाविध का अवसान हो जाने के पँचात् नहीं किया जायेगा।

धारा 26. निरसन - मध्य प्रदेश कांठ चिरान (विनियमन) अध्यादेश दि. 1983 (बमांक 11 वर्ष 1983) एतद्वारा निरसित किया जाता है।

नोट- (1) अधिसूचना ब. 3415/X/83 दिनांक 15-12-83 जो असाधारण राजपस दि. 15-12-83 के ऋकाशित हुआ है। (1) कांठ चिरान (विनियमन) अध्यादेश दि. 15-12-83 से पूरे मध्य प्रदेश राज्य में लागू हुआ।

(2) धारा 3(a) के तहत वन मण्डलाधिकारी को अनुज्ञापन अधिकारी नियुक्त किया गया।

(3) धारा 11(1) के तहत वन संरक्षक को अपील अधिकारी नियुक्त किया।

(4) म.प्र. कांठ चिरान (विनियमन) अधिनियम को 15-12-83 से लागू करना अनियमित नहीं है। मि.

पिटीशन ब. 2992/1984 जबलपुर उच्च न्यायालय निणर्ण दि. 8-9-87

अधिसूचना ब. 18-3-85/दस/3 (अ-1) (अनुज्ञिप्तधारी 1) के द्वारा उक्त अधिसूचना में निम्न संशोधन किया।

संशोधन - उक्त अधिसूचना में अनुबमांक 2 तथा 3 और उससे सम्बन्धित ऋविष्टियों को लोप किया जावे।

म.प्र. शासन, वन विभाग, भोपाल का पस ब. एफ-30-56-93-पाँच-3, दिनांक 23-2-94 जो ऋधान वन संरक्षक एवं अन्य अधिकारियों को संबोधित है के अनुसार : (1) छोटी आरा मशीन और खराब मशीन जहाँ पर कि केवल ऋफर्नी ड

डोडवट्स बनाये जाते हैं और चिराई का कार्य नहीं किया जाता है के नियमतीकरण एवं ः वीकृत हेतु संबंधित वन मण्डलाधिकारी, जो कि अधिनियम में अनुज्ञापन अधिकारी घोषित है को अधिकृत किया जाता है।

1. म.प्र. कांठ चिरान (संशोधन) अधिनियम 2003 द्वारा विनियमित।
2. कोई भी व्यक्ति जिसके पास आरा मशीन चलाने की अनुज्ञिप्त हो, अपनी आरा मशीन अन्य व्यक्ति को बेच सकता है और ऐसी िथित में वह अनुज्ञिप्त उस एक कैलेण्डर वर्ष के लिये बेता/संबंधित व्यक्ति को ह: तांतरित की जायेगी परन्तु उन ूकरणों में जहाँ किसी आरा मशीन के विरुद्ध दाण्डक कार्यवाही ूः तावित हो, अथवा ूगित पर हो, की अनुज्ञिप्त ह: तांतरित नहीं की जायेगी।
3. आरा मशीन की अनुज्ञिप्त तीन वर्ष की फीस लेकर 3 वर्ष के लिए नवीनीकृत की जा सकेगी। इस संबंध में म.प्र. कांठ चिरान (विनियमन) िनयम, 1984 में तदनुसार संशोधन की कार्यवाही की जाये।
(अधिसूचना बर्मांक एफ-18-4-90-पाँच-3, िदनांक 17 जनवरी, 1991 (मध्य प्रदेश राजपऽ (असाधारण) िदनांक 18 जनवरी, 1991 पृष्ठ 240 (4)-240(12) में ूकाशित)
अधिसूचना बर्मांक एफ-30-4-2002-दस-3, िदनांक 8-8-2003 (म.प्र. राजपऽ (असाधारण) िदनांक 15-8-03 पर ूकाशित ितिषद्ध क्षेऽ-

Notification N. F-30-4-2002 दस-3 िदनांक 8-8-2003- In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 5 of the Madhya Pradesh Kashtha Chiran (Viniyaman) Adhiniyam', 1984 (No. I of 1984), the State Government hereby declares the area specified in column (1) of the Table below to be prohibited area for the period specified in the corresponding entry in column (4) thereof for the reasons specified in column (5) of the said Table -

तालिका (Table)

अनुबर्मांक िजला ू	ितिषद्ध क्षेऽ होना घोषित ू	ितिषद्ध रहने की अविध	कारण Serial
District	Area (Specified)	Period	Reasons
(1)	(2)	(3)	(4)
1. Shivpuri	Total Geographical area of Shivpuri district excluding Municipal area Shivpuri, Kolaras, Badarwas, Karera, Pichhor, Vilalge area, Bhagorn, Hatod, Piparasama, Pohri, Bhatanwar, Kakarauva, Parichhava, Gajigarh, Lukawasa, public interest	3 yrs. For conservation of forests and environment in	Randua, Akajhiri, Mada-Ganesh, Kheda, Piroth,
2. Guna	Total Geographical area of Guna, district excluding Municipal area Guna excluding Municipal area Ashok nagar, Chanderi, Mungawali, and Binaganj, Village area Myana, Bhaura, Kumbharaj, Mrigwas, Isagara, Anandpur, Naisarai, Piparai, Sadora, Raghogarh, Aron, Ruthiai, Awan, Govindpura, dharanawada, Maksudangarh, and Jamner.		
3. Betul	Total Geographical area of Betul district excluding Municipal area Betul, Amla, Bhainsdehi, Multai and Village Pathakhala Collery, Khadna, area. Village area, Ghodadongri, Shahpur, Bhura, Khodli Bazar Paramandal, Birul, Ashta, Amraoti, Khat, Gola, Chikali, Nimanwada, Athenr and Chicholi.		
4. Khandwa	Total Geographical area of Khandwa, district excluding Municipal Corporation area (East Nimar) Khandwa and Burhanpur, Harsud, and Shahpur, Nepanagar, Singot.		

5. Khargone district Total Geographical area of Khargone, district excluding Municipal area of Khargone, (West Nimar) Sanawad, Bhikangaon, Burwaha,
6. Barwani district Badwani, Anjad, Pansemal and Sendhwa Village, area Balkuva. Karahi, Mandleshwar.
7. Indore district Total Geographical area of Indore, district excluding Municipal Corporation area Indore, Municipal area Sanwer, Depalpur, Manpur, Contonment area Mhow, Village area Kachhalia Chandankhedi, Badi-Kalmer, Kampekl, Billor Khurd, Pivray, Dharampuri, Tejaji Nagar, Gautampura, Hatod, Betma, Rao, Bharanat, Chandawatiganj, Semiliachau, Mhowgaon, Kishanganj, Hasalpur, Kshipra, Girota and Kanadia.
8. Dhar district Total Geographical area of Dhar, district excluding Municipal area Dhar, Kukshi, Saradarpur, Badnawar, Manawar, Dharampuri and Dhamnod, Village area Kasiur, Anarad, Rajgad, Kamwan, Dasai, Bidwal, Barmandal, Makni, Edalduna, Jajod, Mandu, Dhanabilod, Sagor, Bakaner, Singhana, Walipur, Pithampur & Lohari.
9. Dewas Total Geographical area of Dewas, district forests district and excluding Municipal Corporation area Dewas, Municipal area Sonkatch, Bhonrasa, Hatpiplia, Tonk-Khurd, Kannod, Khategaon, Kantaphod, Lahahda, Satwas, Bagli, and Karnawad, Village area Edlora, Bohri, Chapra., Sundrol, Pathari, Devgarh, Suklia, Kshipra, Maukhera (Newari) Khatamba, Tigria-Goga, Agrod, Jirwai, Vijaganj Mandi (Dhammani) Itawa, Pipal-Rawan Chobaradhira, Amla, Taj, Bhutiya Buzurg, Ranawat Kalan and Singaoda.
10. Jhabua district Total Geographical area of Jhabua district excluding Municipal area Bhabhra (Excludng village Kukhsi), Jhabua, Ranapura, Bamniya, thandla, Petlawad and Alirajpur, Village area Khardu-Badi, Meghanagar, Jhaknawada, Karawada, Sarangi and Barwet.
11. Balaghat excluding district area Total Geographical area of Balaghat district excluding Municipal area Katangi, Varaseoni, Balaghat, Hatta, Kirnapur, Lanji, Khairalanji and Baihar, Village Dongarniali, Pandarvani, Sarakha, Aonlihiri, Kosami Piparjhari, Harri, Lamta Tirodi (Katangi).
12. Gwalior excluding district area Total Geographical area of Gwalior district excluding Municipal Corporation area Dabra, Panihar, Antri, Galon and Bichhodna.
13. Morena district Total Geographical area of Morena district excluding Municipal area Morena, Sheopur, Ambah, Porasa, Bamor, Jora, Kalaras, Sabalgarh and Vijaypur village, area Bankoda, Soi-Daraukala, Premasar, Chandrapura, Utanwada, Nurabad, Chheta Sumaoli, Parasota, Rithora, Kala, Depaira, Neptri Gasawani, Sahasafi and Birpur.
14. Bhind district Total Geographical area of Bhind district excluding Municipal area Bhind, (leaving Chaulana Reserve Forest) Mehgaon, Lahar, Ater and Gohad, Village area Pratappura, Jorikotawal, phunk, Akoda, Gorami, Kohar, Ammayyan, Chotora, Mau, Raun, Mihona, Katha, Badotari, Ashwar, Deorikala, Sausari, Rural, Alampur, Daboh, Rahabaili and Uwari, Khuja (Ratanpur).

15. Datia district
Bhagwanpura, Total Geographical area of Datia district excluding Municipal area Datia, Indergarh, and Sewada Village area Busawada, Targuwa, Jaunia, Tharat, Basai and Diguwa, Igner, Unao, Balaji.
16. Jabalpur district
Jabalpur, Municipal area
Sehora (Khatola) Shahpur Total Geographical area of Jabalpur district excluding Municipal Corporation area Patan, Panagar, Katni and (Bhitoni).

1. अधिसूचना ब. एफ-30-4-2002-दस-3, दिनांक 14.3.06 से बालाघाट जिले के किरनापुर, िहरीर, लांजी, खैर लाजी, लालबरा, मानपुर कोसमी अमला िझरी को ूतिसद्ध क्षेऽ से मुक् त करती है।

17. Mandla district
Deodasa, Niwas
Total Geographical area of Mandla district excluding Municipal area, Mandla, Maharajpur, Bambni, Nainpur, Dindori, and Shahpura, Village area Gohji, Raiat, Khedi, Manadei, (Chiraidongri Railway Station) Gada, Sarai, Barela Lalipur, Bechhiya, Kalpi Tikarai,
18. Rewa district
Mhowganj, Tendusarch, Chorhata, and Khatakhari, Total Geographical area of Rewa district excluding Municipal area Semaria, Chakghat, Sirmor, Baikunthpur, Rewa, Raipur, Managawa, Hanumana, and Naigadi, Village, area Delhi, Nipania, Kherra, Deotalao, Ratangawa Gudha, Teonthar.

19. Satna district
Total Geographical area of Satna district excluding the following town/village, area-village Umri, Satna Bazar, Dhawari and Kuthi of Municipal Corporation Satna, Village Birhadihi Lalpur and Amarpatan of Municipal Amarpatan, Village Patehara, Maihar and Harnampur bazar Of Municipal Maihar, Village Bador and Kothi of Municipal Kothie Village Tilora, Baraj, Gargwar, Tharsadawa, Namtara, Naguad, Maharai, Kothar, Mahadahi and Barapa of Municipal Nagaud, Pateri Viratnaar, Mandi-Tola bardadeeg, Kologeaon, Rampur Baghelan, Muncipal area Kotar and village Jaso, Raigon Bihra, Ramnagar,

20. Sidhi district
Total Geographical area of Sidhi district excluding village area Karondia-North tola, South tola Daniha, Sidhi-Kala, Madaria, Madhuri, Kothar, Kotarkala, Kotaha in Municipal Sidhi, Village area Patai Behera, Kesliwahi, Churhat, Gulawaspur, Dadar, Bhataha, Ramkudwa, Koladaha, Rajaghat, Barahal, Nauthia, Abad, Naudhai-Viram, Badhan, Medholi, Panjreh, Parasona, Baragawa and Dondi.

21. Ujjain
Total Geographical area of Ujjain district excluding Municipal Corporation area Ujjain Municipal area Tarana, Barnagar, Khachrod, Mahidpur, Nagda, Unhel, Village area of Tajpur, Nam ar, Panthpiplai, Smodia Ghatia, Makdone, Roopa-Khedi Pat, Kaytha, Kath Barod, Jhomki, Bichhord, Ghosla Jagoti Maho, Jharda, Limboda, Jahagirpur, Karadi, Kharshrod, Khurd/Kala, Molans, Lohana, Piploo Talodkha, Runija, Chirola, Mdawads, Bedawaniya, Gangpur Zunthawad

22. Shajapur district
Total Geographical area of Shajapur district excluding Municipal area Shajapur Maksi, Berchha, Moban. Barodia, Shujalpur, Kalapipal, Akoodia, Papa-Pakia, Sunser, Soyat Agar, Kanod, Barod, Nalkheda, Village area of Jaloda Sundrasi, Ghosla, Kulmi, Jhaker, Rath, Bhawar, Parwadi Syberam Dupara, Bolai, Choma Bijanna, Salsalai, Poda, Tilewad, Aroyakaln, Arondiya, nanadini, Khokra, Kalan, Berchha, Dattar, Avantipur, badodia, Dongeraon, Payli,

- Nodi, Nena Piplonkaloon, Tanadoia, Garbeda, Bahaon,
Kholgaon, Tolkyia, Pudi, Khadi, Damdam, gunderwan,
Godlamau, Pipatyavigay.
23. Ratlam district Total Geographical area of Ratlam district excluding
Municipal Corporation area Ratlam, Municipalarea Sailana,
Namli Alot, Tal. Jawara and Piploda Village area Dentodia,
Shivpur, Bangrod-Barbodna. Badawada, Khatakhedi,
Dhodhar and Sukheda.
24. Mandsaur district Total Geographical area of Mandsaur district excluding
Municipal area Mandsaur, Neemuch,
25. Neemuch Naryangarh, Pipliamandi, Sitamau, Mehargarh, Singoli,
Jawad, Manasa, Shayamgarh, Garoth and Bhanpura, Village
area Daloda, Dhundbarka, Chillod, Piplai, Lasurai, Khesdia, Titrod,
Digeonmali, Balaguda, Jhantla, Athwa, Bugrug, Diken, Budarawan,
Dewara, Kanghati, Umaria, Vashaniya, Nagri, Nimbod, Nikhod, Kachnara,
palsor, Athana, Chitakheda, Jiran, Dhanoria Road, Sanjed, Mandla,
Athwakhajuri, Panth, Bhensoda Ghandwasa, Malkheda, Bolia,
barkheda, Gangasa, Bardia, Amra, Kalakheda, Khadawada, Hatunia,
Suwasara, Sarwania, Maharraj J.
Laduna, Tonduka Nehargarh, Sarthkheda, Lothkheda,
Antri Buzurg, Kukadeshwar Kayampur, Bahi Parasanth
Depakheda, Chacor, Mahagarh, Takrawad and Runija.
26. Bhopal district Total Geographical area of Bhopal district excluding
Municipal Corporation area Bhopal, Municipal
area Berasia.
27. Rajgarh district Total Geographical area of Rajgarh district excluding
Rajgarh, Beorakala, Khujner, Beora, Chapi heda, Padana,
Beralpur, Khajoori-Gokul, Kurawar, Khilchipur, Peepaleda,
Hakhed, Talen, Udenkhedi, Bmainswaa-Mata, Mau, Myona,
Pachor, Pandlyamata, Narsingharh, Suthalia, Karanwas,
Lakhanwas, Malwar, Boda, Mondawar, Parispura Raipuriya,
Khadi, Machalpur Ramgarh, Papdel, Peepalyakala,
Khajuria, Sonkhera, Amatyahai, Peepalya-kusmi, Bhojpur,
Hasnod, Gongrmi, Sarangpur, Iklehra, Semrikala, Asrehta,
Kharya, Adkhera, Adeie-Hada,
28. Vidisha district Leerabhohan, Panwodi, Jamunia, Gopchouhan,
Dhuwakheri, Karodi, Jhadla, Chara, Kotharikala,
Gongasemi & Sultania.
29. Raisen district Total Geographical area of Vidisha district excluding
Municipal area Vidisha, basoda, Sironj and Village
area Pathari and Gulabganj, Lateri,
30. Sehare district Total Geographical area of Sehare district excluding
Municipal area Sehare, Ichhawar, Ashta, Nasrullaganj,
Rehti and Budni, Jawar, Village area Shvampur, Sewda,
Kelerama, Arolialat, Namainankala, Amalaha, Katheri,
Karman, Khedi, Kaijlan, Mukkara Jharkheda, Khawai-
kheda, Dhamanda Metawada, Bhapoda, Berkheri,
Khunjnia-kala, Joontala and Khandwa Village Ahamadupur.
31. Shahdol district Total Geographical area of Shahdol district excluding
Municipal area Beohari, Pali, Shahdol, Budhar, Anuppur,
Kotama, Umaria and Chandia, Village area Dhanpuri, Amlai
Bijuri, Jaisinghnagar and Vivek Nagar.
32. Sagar district Total Geographical area of Raisen district excluding
Municipal area Raisen, Begamganj, Udaipura, Geratganj,
Bareli, Sultanpur and Village area Obedullaganj, Sada,
Mandideep, Navapura, Khargone, Nanpur and Gugalwada.

33. Damoh district Total Geographical area of Sagar district excluding Municipal Corporation area of Sagar, Municipal area Khurai, Bina banda, Shahgarh and Deori, Village area Mandibganiora, Sanocha, Gaurjhamar, Gadakota, Rahaili, Shahpur.
34. Chhatarpur district Total Geographical area of Damoh district excluding Municipal area Damoh and hatta, Village area Hindoria, Patharia, Cuch, Rasilpur, and Phitorakala.
35. Panna district Total Geographical area of Chhatarpur district excluding Municipal area Chhatarpur, Naogaon, Laundi, (Harpalpur), Gadi, Malabra, Maharajpur, Bamgarh, Rajnagar in Sada area Khajurao Village area Sarawai, Alipura and Hatam. Total Geographical area of Panna district excluding village area Ajaigarli, Bliadurganj, Madhoganj, Badriundli, Alampur, rajapur, Kolan, Panna, Kakarbatti, Devandranagar, Tidhari, Thidharikhurd, Badera, Reojisagar, Bamuri, Badawara, Jamin-Baladhar Amanganj, Pawai and Gunorse.
36. Tikamgarh district Total Geographical area of Tikamgarh district excluding Municipal area Tikamgarh, Baldeogarh, Lidhora, Prithvipur, Jatara, Tancherkala, Mawai and Bhelsi, Village area Ajnor, Archara, Barana (Thar), Baniori-kala, Chanderi, Shavani, Guhara and Maharajpur, karkua, Koili, Jeron, Khedri, Majal, Khanpur Niwadi, Badagaon (Dhasam), Deri, Dharagapur, Jerakhas, Vermimajha.
37. Hoshangabad district Total Geographical area of Hoshangabad district excluding Municipal area Hoshangabad, Itarsi, Sohagpur, Harda, Seonibanapura, Khirkai and Timarni, Village area Babai, Them, Rawanpipal and Shivpur, Piparia.
38. Chhindwara district Total Geographical area of Chhindwara district excluding Municipal area Amarwada, Harrai and Chhindwara, Village area Jamai, Parasia, Rakhiool, राजपस असाधारण Navegaon, Dumua, Pandurna, Saunser, िद. 10-8-94 P. 736 Pipalanarayanvarcol, Lodhikheda, Kalamagaon, Umranala, Imlikheda, and Ghutani, Ikalhara, (1) 'बेरदी' Unprohibited area) Bhemani, Nutanchikli, Shivpuri, Rawanwada, Unprohibited (2) बोरगांव - Ambada, Sukari, Hohan Colliery, Nandan, राजपस असा. Ghodawadi, Chaurai, Vishnupuri. 12.5.95 पेज (3) चौराई राजपस असा. 26.10.93 P. 707

Notification No. F-30-56-93-X-3, dated the 18 April 1995. In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 5 of Madhya Pradesh Kashtha Chiran (Viniyaman) Adhiniyam, 1984 (No. 13 of 1984), the State Government hereby declares Industrial Area Boregaon of Chhindwara District as unprohibited Area out of the de-0 lared prohibited areas., as published in the Notification No F-30-56-93-X-3, dated 23rd February, 1994 in Extraordinary Gazette, Notification dated 23rd February 1994.

[Published in M.P. Rajpatra Part 1, dated 12-5-95 page 717]

39. Seoni district Manendragarh and Chainpur, Total Geographical area of Seoni district excluding Municipal area of Seoni and Baraghat, Village area Lakhnadaun, Gangerua, 'Dharna, Khanhiwada.

Notification No. F-30-56-93-X-3, dated the 29 December 1994. In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 5 of Madhya Pradesh Kashtha Chiran (Viniyaman) Adhiniyam, 1984 (No. 13 of 1984), the State Government hereby declares Municipal area Gangerua (Chhapra) of Seoni District as prohibited out of the declared unprohibited areas., as published in the Notification No F-30-56-93-X-3, dated 23rd February, 1994 in "Extraordinary Gazette", Notification dated 23rd February 1994.

[Published in M.P. Rajpatra (Asadharan) dated 29-12-94 page 2214]

40. Narsinghpur district Total Geographical area of Narsinghpur district (गंगेरुआ (छपरा) district excluding Municipal area Narsinghpur, Kareli, िसवनी िजला

Gotegaon Nagar and Gadrwada, village area,
prohibited
Salichauka, and Barman. राजपस असा.

Dokarghat,

दि. 29.12.94
P. 2214

[Published in M.P. Rajpatra (Asadharan) dated 23-2-94 page 2 126 (8-16)]

Notification No. F-30-56-93-X-3, dated the 29 December 1994. In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 5 of Madhya Pradesh Kashtha Chiran (Viniyaman) Adhiniyam, 1984 (No. 13 of 1984), the State Government hereby declares village "Dagania" Tahsil Gunderdehi of Durg District as unprohibited areas., as published Extraordinary Gazette Notification No F-30-56-93-X-3, dated 23rd February 1994.

[Published in All. P Rajpatra Part 1, dated 12-5-95 page 717]

